Resource: अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

License Information

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord) (Hindi) is based on: unfoldingWord® Translation Questions, unfoldingWord, 2022, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

ROM

रोमियों 1:1–2, रोमियों 1:3, रोमियों 1:4, रोमियों 1:5, रोमियों 1:8, रोमियों 1:11, रोमियों 1:13, रोमियों 1:16, रोमियों 1:17, रोमियों 1:18–19, रोमियों 1:20, रोमियों 1:20 (#2), रोमियों 1:21, रोमियों 1:24, रोमियों 1:26–27, रोमियों 1:28, रोमियों 1:29, रोमियों 1:32, रोमियों 1:32 (#2), रोमियों 2:1, रोमियों 2:2, रोमियों 2:4, रोमियों 2:5, रोमियों 2:7, रोमियों 2:8–9, रोमियों 2:12, रोमियों 2:13, रोमियों 2:14, रोमियों 2:21, रोमियों 2:21–22, रोमियों 2:23–24, रोमियों 2:25, रोमियों 2:26, रोमियों 2:28–29, रोमियों 2:29, रोमियों 3:1–2, रोमियों 3:4, रोमियों 3:5–6, रोमियों 3:8, रोमियों 3:9–10, रोमियों 3:11, रोमियों 3:20, रोमियों 3:20 (#2), रोमियों 3:21, रोमियों 3:22, रोमियों 3:24, रोमियों 3:25, रोमियों 3:26, रोमियों 3:28, रोमियों 3:30, रोमियों 3:31, रोमियों 4:2, रोमियों 4:3, रोमियों 4:5, रोमियों 4:6–8, रोमियों 4:9–10, रोमियों 4:11–12, रोमियों 4:13, रोमियों 4:14, रोमियों 4:16, रोमियों 4:17, रोमियों 4:18, रोमियों 4:18–19, रोमियों 4:20, रोमियों 4:23–24, रोमियों 4:25, रोमियों 5:1, रोमियों 5:3–4, रोमियों 5:8, रोमियों 5:9, रोमियों 5:10, रोमियों 5:12, रोमियों 5:14, रोमियों 5:15, रोमियों 5:16, रोमियों 5:17, रोमियों 5:19, रोमियों 5:20, रोमियों 5:20 (#2), रोमियों 6:1–2, रोमियों 6:3, रोमियों 6:4, रोमियों 6:5, रोमियों 6:6, रोमियों 6:9, रोमियों 6:10, रोमियों 6:10–11, रोमियों 6:10–11 (#2), रोमियों 6:13, रोमियों 6:14, रोमियों 6:18–19, रोमियों 6:22, रोमियों 6:23, रोमियों 6:23 (#2), रोमियों 7:1, रोमियों 7:2, रोमियों 7:3, रोमियों 7:4, रोमियों 7:4 (#2), रोमियों 7:7, रोमियों 7:7 (#2), रोमियों 7:8, रोमियों 7:12, रोमियों 7:13, रोमियों 7:16, रोमियों 7:17, रोमियों 7:18, रोमियों 7:21, रोमियों 7:22, रोमियों 7:23, रोमियों 7:25, रोमियों 8:2, रोमियों 8:3, रोमियों 8:4–5, रोमियों 8:7, रोमियों 8:9, रोमियों 8:11, रोमियों 8:14, रोमियों 8:15, रोमियों 8:17, रोमियों 8:18–19, रोमियों 8:21, रोमियों 8:21 (#2), रोमियों 8:23–25, रोमियों 8:26–27, रोमियों 8:28, रोमियों 8:29, रोमियों 8:30, रोमियों 8:32, रोमियों 8:34, रोमियों 8:37, रोमियों 8:39, रोमियों 9:3, रोमियों 9:4, रोमियों 9:6–7, रोमियों 9:8, रोमियों 9:8 (#2), रोमियों 9:10–12, रोमियों 9:14–16, रोमियों 9:16, रोमियों 9:20, रोमियों 9:22, रोमियों 9:23, रोमियों 9:24, रोमियों 9:27, रोमियों 9:30, रोमियों 9:32, रोमियों 9:32–33, रोमियों 9:33, रोमियों 10:1, रोमियों 10:3, रोमियों 10:3 (#2), रोमियों 10:4, रोमियों 10:8, रोमियों 10:9, रोमियों 10:13, रोमियों 10:14–15, रोमियों 10:17, रोमियों 10:18, रोमियों 10:19, रोमियों 10:21, रोमियों 11:1, रोमियों 11:5, रोमियों 11:7, रोमियों 11:8, रोमियों 11:11, रोमियों 11:11 (#2), रोमियों 11:13–17, रोमियों 11:18, रोमियों 11:20–21, रोमियों 11:23–24, रोमियों 11:25, रोमियों 11:28–29, रोमियों 11:30–32, रोमियों 11:30–32 (#2), रोमियों 11:33–34, रोमियों 11:36, रोमियों 12:1, रोमियों 12:2, रोमियों 12:3, रोमियों 12:4–5, रोमियों 12:6, रोमियों 12:10, रोमियों 12:13, रोमियों 12:14, रोमियों 12:16, रोमियों 12:18, रोमियों 12:19, रोमियों 12:21, रोमियों 13:1, रोमियों 13:2, रोमियों 13:3, रोमियों 13:4, रोमियों 13:6, रोमियों 13:8, रोमियों 13:8 (#2), रोमियों 13:9, रोमियों 13:10, रोमियों 13:12, रोमियों 13:13, रोमियों 13:14, रोमियों 14:2, रोमियों 14:3, रोमियों 14:3–4, रोमियों 14:5, रोमियों 14:7–8, रोमियों 14:10, रोमियों 14:13, रोमियों 14:14, रोमियों 14:17, रोमियों 14:21, रोमियों 14:23, रोमियों 15:1–2, रोमियों 15:3, रोमियों 15:4, रोमियों 15:5, रोमियों 15:8–9, रोमियों 15:10–11, रोमियों 15:13, रोमियों 15:16, रोमियों 15:18–19, रोमियों 15:20–21, रोमियों 15:24, रोमियों 15:25, रोमियों 15:27, रोमियों 15:31, रोमियों 16:1–2, रोमियों 16:4, रोमियों 16:5, रोमियों 16:7, रोमियों 16:16, रोमियों 16:17, रोमियों 16:17–18, रोमियों 16:19, रोमियों 16:20, रोमियों 16:22, रोमियों 16:23, रोमियों 16:25–26, रोमियों 16:26

रोमियों 1:1–2

पौलुस से पहले परमेश्वर ने किससे सुसमाचार प्रतिज्ञा की थीं?

परमेश्वर ने पहले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में इसकी प्रतिज्ञा की थी।

रोमियों 1:3

शरीर के भाव से, परमेश्वर का पुत्र किस वंश से उत्पन्न हुआ?

शरीर के भाव से, परमेश्वर का पुत्र दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ।

रोमियों 1:4

किस कारण से यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र ठहरा है?

पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।

रोमियों 1:5

पौलुस को मसीह से अनुग्रह और प्रेरिताई किस उद्देश्य से मिली?

पौलुस को अनुग्रह और प्रेरिताई इसलिये मिली कि सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।

रोमियों 1:8

पौलुस रोम के सब विश्वासियों के लिए परमेश्वर का किस बात के लिए धन्यवाद करते हैं?

पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद इस बात के लिए करते हैं की उनके विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है।

रोमियों 1:11

पौलुस रोम में विश्वासियों से मिलने की लालसा क्यों करते हैं?

पौलुस उनसे मिलने की लालसा इसलिए करते हैं ताकि वे उन्हें कुछ आत्मिक वरदान दे सकें, जिससे वे स्थिर हो जाएँ।

रोमियों 1:13

पौलुस अब तक रोम के विश्वासियों से मिलने क्यों नहीं आ सके थे?

पौलुस अब तक रुके रहने के कारण उनसे मिलने नहीं आ सके थे।

रोमियों 1:16

पौलुस सुसमाचार को क्या बताते है?

पौलुस कहते हैं कि सुसमाचार हर एक विश्वास करनेवाले के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।

रोमियों 1:17

धर्मी जन कैसे जीवित रहेगा के विषय में पौलुस क्या लिखा है कहते हैं?

पौलुस कहते हैं कि लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा"।

रोमियों 1:18–19

अभक्ति और अधर्मी लोग क्या करते हैं, इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है?

अभक्ति और अधर्मी लोग सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं, इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है।

रोमियों 1:20

परमेश्वर के अनदेखे गुण किसके द्वारा देखने में आते हैं?

जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा परमेश्वर के अनदेखे गुण देखने में आते हैं।

रोमियों 1:20 (#2)

परमेश्वर के कौन-कौन से गुण देखने में आते हैं?

परमेश्वर की सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व देखने में आते हैं।

रोमियों 1:21

जिन लोगों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, उनके विचार और मन क्या हो गए?

जिन लोगों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, वे व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उनका मन अंधेरा हो गया।

रोमियों 1:24

परमेश्वर उन लोगों के साथ क्या करते हैं जो उनकी महिमा को नाशवान मनुष्य और जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला?

परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें।

रोमियों 1:26–27

पुरुष और स्त्रियाँ कौन से नीच कामनाओं के वश में कामातुर होकर जलने लगे?

स्त्रियों ने स्त्रियों के साथ और पुरुषों ने पुरुषों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे।

रोमियों 1:28

जिन लोगों ने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, उनके साथ परमेश्वर ने क्या किया?

परमेश्वर उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ देते हैं; कि वे अनुचित काम करें।

रोमियों 1:29

निकम्मा मन वाले लोगों के कुछ लक्षण क्या हैं?

निकम्मे मन वाले लोग अधर्म, दुष्टता, लोभ, बैर-भाव, डाह, हत्या, झगड़े, छल, ईर्ष्या, और चुगलखोरी, से भरपूर होते हैं।

रोमियों 1:32

निकम्मे मन वाले लोग परमेश्वर की विधि को कैसे जानते हैं?

निकम्मे मन वाले लोग परमेश्वर की विधि ऐसे जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं।

रोमियों 1:32 (#2)

निकम्मे मन वाले लोग परमेश्वर की विधि को जानने के बावजूद क्या करते हैं?

वे न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।

रोमियों 2:1

दोष लगानेवाला दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में वह अपने आपको भी दोषी क्यों ठहराता है?

दोष लगानेवाला दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में वह अपने आपको भी दोषी इसलिए ठहराता है क्योंकि स्वयं ही वही काम करता है।

रोमियों 2:2

ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से कैसी दण्ड की आज्ञा होती है?

ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से सच्चे दण्ड की आज्ञा होती है।

रोमियों 2:4

परमेश्वर की भलाई, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन का उद्देश्य क्या है या क्या सिखाती है?

परमेश्वर की भलाई, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन किसी व्यक्ति को मन फिराव को सिखाती है।

रोमियों 2:5

परमेश्वर के प्रति अपने कठोरता और हठीले मन के अनुसार, वे अपने लिए क्या कमा रहे हैं?

अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

रोमियों 2:7

जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह क्या देगा?

जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा।

रोमियों 2:8–9

जो अधर्म को मानते हैं, उन पर क्या पड़ेगा?

जो अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा।

रोमियों 2:12

परमेश्वर कैसे व्यवस्था पाए और बिना व्यवस्था के लोगों का न्याय बिना पक्षपात करते हैं?

जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया, उनका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा।

रोमियों 2:13

परमेश्वर के यहाँ कौन धर्मी ठहराए जाएँगे?

परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएँगे।

रोमियों 2:14

अन्यजाति लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं, तो वे कैसे व्यवस्था की बातों पर चलते हैं?

अन्यजाति लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।

रोमियों 2:21

जो औरों को सिखाता है और उपदेश देता है उसे पौलुस क्या चुनौती देते हैं?

जो औरों को सिखाता है और उपदेश देता है उसे पौलुस यह चुनौती देते हैं, की उसे स्वयं को भी सिखाना चाहिए।

रोमियों 2:21–22

पौलुस किन पापों का उल्लेख करते हैं जिन्हें व्यवस्था के सिखानेवाले छोड़ दें?

पौलुस चोरी, व्यभिचार और मन्दिरों की लूट जैसे पापों का उल्लेख करता है।

रोमियों 2:23–24

व्यवस्था के सिखानेवालों के कारण अन्यजातियों में परमेश्वर का नाम अपमानित क्यों हो रहा है?

व्यवस्था के सिखानेवाले व्यवस्था को न मानकर, परमेश्वर का अनादर करते हैं, जिससे परमेश्वर का नाम अपमानित हो रहा है।

रोमियों 2:25

पौलुस यह क्यों कहते हैं कि तेरा खतना बिन खतना की दशा ठहरा?

पौलुस कहते हैं कि यदि तू व्यवस्था को न माने, तो तेरा खतना बिन खतना की दशा ठहरा।

रोमियों 2:26

पौलुस कैसे कहते है कि खतनारहित मनुष्य की दशा बिन खतने के बराबर गिनी जाएगी?

पौलुस कहते हैं कि यदि खतनारहित मनुष्य व्यवस्था की विधियों को माना करे, तो उसकी बिन खतना की दशा खतने के बराबर गिनी जाएगी।

रोमियों 2:28–29

पौलुस के अनुसार एक सच्चा यहूदी कौन है?

पौलुस कहते हैं कि यहूदी वही है, जो आन्तरिक है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है।

रोमियों 2:29

एक सच्चे यहूदी की प्रशंसा किसके ओर से होती है?

एक सच्चे यहूदी की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।

रोमियों 3:1–2

पहले तो यहूदी की बड़ाई क्या है?

यहूदी की बड़ाई पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन उनको सौंपे गए।

रोमियों 3:4

हर एक मनुष्य झूठा ठहरे, वरन् परमेश्वर कैसा ठहरे?

हर एक मनुष्य झूठा ठहरे, वरन् परमेश्वर सच्चा ठहरे।

रोमियों 3:5–6

क्योंकि परमेश्वर धर्मी हैं, वह क्या करेंगे?

क्योंकि परमेश्वर धर्मी हैं, वह जगत का न्याय करेंगे।

रोमियों 3:8

उन पर क्या ठीक है जो कहते हैं, "हम क्यों बुराई न करें कि भलाई निकले?"

जो लोग कहते हैं, "हम क्यों बुराई न करें कि भलाई निकले," ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है।

रोमियों 3:9–10

यहूदियों और यूनानियों दोनों की धार्मिकता के बारे में पवित्रशास्त्र में क्या लिखा हुआ है?

यह लिखा है कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।

रोमियों 3:11

लिखे हुए के अनुसार, कौन परमेश्वर को समझते और खोजते हैं?

जो लिखा है उसके अनुसार, कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर को खोजनेवाला नहीं।

रोमियों 3:20

क्या कोई प्राणी व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहरे?

व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा।

रोमियों 3:20 (#2)

व्यवस्था के कामों से क्या होता है?

व्यवस्था के कामों से पाप की पहचान होती है।

रोमियों 3:21

अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता किसकी गवाही से प्रगट हुई है?

अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता की गवाही से प्रगट हुई है।

रोमियों 3:22

बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता किसके द्वारा सब विश्वास करनेवालों के लिये है?

बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है।

रोमियों 3:24

एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने कैसे धर्मी ठहराया जाता है?

एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने उनके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराया जाता है।

रोमियों 3:25

परमेश्वर ने मसीह यीशु को उनके लहू के कारण क्या ठहराया?

परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है।

रोमियों 3:26

परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा जो कुछ भी किया, उससे क्या प्रगट हो?

परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा प्रगट किया कि जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।

रोमियों 3:28

क्या व्यवस्था के कामों द्वारा कोई धर्मी ठहरता है?

एक मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, बल्कि बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

रोमियों 3:30

परमेश्वर यहूदी जो खतनावाले हैं और अन्यजाति जो खतनारहित हैं, उन दोनों को कैसे धर्मी ठहराएँगे?

परमेश्वर दोनों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएँगे।

रोमियों 3:31

हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था का क्या ठहरते हैं?

हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को स्थिर करते हैं।

रोमियों 4:2

अब्राहम को घमण्ड करने का क्या कारण हो सकता था?

यदि अब्राहम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने का कारण होता है।

रोमियों 4:3

पवित्रशास्त्र अब्राहम के धर्मी ठहराए जाने के बारे में क्या कहता है?

पवित्रशास्त्र कहता है कि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।

रोमियों 4:5

परमेश्वर किन लोगों को धर्मी ठहराते हैं?

परमेश्वर उन लोगों को धर्मी ठहराते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं।

रोमियों 4:6–8

दाऊद के अनुसार, किस प्रकार का मनुष्य परमेश्वर द्वारा धन्य होता है?

दाऊद के अनुसार, धन्य वे हैं, जिनके अधर्म क्षमा हुए, और जिनके पाप ढांपे गए।

रोमियों 4:9–10

क्या अब्राहम का विश्वास खतने की दशा में या बिना खतने की दशा में धर्मिकता के रूप में गिना गया?

खतने की दशा में नहीं परन्तु बिना खतने की दशा में अब्राहम के लिये उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया।

रोमियों 4:11–12

अब्राहम किन सब के पिता ठहरे?

अब्राहम उन सब का पिता ठहरे, जो बिना खतने की दशा में और खतने की दशा में विश्वास करते हैं और विश्वास के पथ पर भी चलते हैं।

रोमियों 4:13

अब्राहम और उनके वंश को विश्वास की धार्मिकता के द्वारा क्या प्रतिज्ञा मिली?

अब्राहम और उनके वंश से यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगें।

रोमियों 4:14

यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं, तो क्या होता?

यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी।

रोमियों 4:16

विश्वास किस कारण से प्रतिज्ञा पर आधारित है?

विश्वास इसी कारण, प्रतिज्ञा पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि वह सब वंश के लिये दृढ़ हो।

रोमियों 4:17

पौलुस कौन-कौन सी दो बातें कहते हैं जो परमेश्वर करते हैं?

पौलुस कहते हैं कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं।

रोमियों 4:18

अब्राहम ने निराशा के बावजूद परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर कैसी प्रतिक्रिया दी?

अब्राहम ने परमेश्वर पर निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया।

रोमियों 4:18–19

कौन-सी निराशा ने अब्राहम के लिए यह विश्वास करना कठिन बना दिया कि वह बहुत सी जातियों का पिता हो?

जब परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा किया, तब अब्राहम लगभग सौ वर्ष के थे और सारा का गर्भ मरी हुई की सी दशा जैसी थी।

रोमियों 4:20

अब्राहम ने इस निराशा के बावजूद परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर कैसे प्रतिक्रिया दी?

अब्राहम विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया।

रोमियों 4:23–24

अब्राहम का यह वचन किसके लिए लिखा गया था?

अब्राहम का यह वचन न केवल उसी के लिये लिखा गया, वरन् हमारे लिये भी जिनके लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा।

रोमियों 4:25

हम क्या विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिए किया है?

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, जो हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।

रोमियों 5:1

क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, इसलिए विश्वासी क्या करे?

क्योंकि वे विश्वास से धर्मी ठहरे, कि वे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।

रोमियों 5:3–4

क्लेश से क्या उत्पन्न होती है?

क्लेश से धीरज, खरा निकलना, और आशा उत्पन्न होती है।

रोमियों 5:8

परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई किस रीति से प्रगट करता है?

परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

रोमियों 5:9

मसीह के लहू से धर्मी ठहराए जाने पर, विश्वासी किससे बचेंगे?

मसीह के लहू द्वारा धर्मी ठहराए जाने पर, विश्वासी परमेश्वर के क्रोध से बचेंगे।

रोमियों 5:10

यीशु के द्वारा परमेश्वर से मेल होने से पहले, अविश्वासियों का परमेश्वर के साथ कैसा संबंध होता है?

अविश्वासी, यीशु के द्वारा परमेश्वर से मेल होने से पहले, परमेश्वर के बैरी होते हैं।

रोमियों 5:12

एक मनुष्य के पाप के द्वारा क्या आया?

एक मनुष्य के पाप के द्वारा, पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई।

रोमियों 5:14

वह कौन थे जिनके द्वारा से पाप संसार में आया?

वह आदम थे जिनके द्वारा से पाप इस संसार में आया।

रोमियों 5:15

एक मनुष्य (आदम) के पापों से परमेश्वर का वरदान कैसे भिन्न है?

क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ।

रोमियों 5:16

एक मनुष्य (आदम) के पाप का क्या फल हुआ, और बहुत से अपराधों से कैसा वरदान उत्पन्न हुआ?

एक मनुष्य (आदम) के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुत से अपराधों से ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे।

रोमियों 5:17

एक मनुष्य (आदम) के अपराध के कारण क्या हुआ, तो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से क्या करेंगे?

एक मनुष्य (आदम) के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

रोमियों 5:19

एक मनुष्य (आदम) के आज्ञा न मानने से बहुत लोग क्या ठहरे, और एक मनुष्य (मसीह) के आज्ञा मानने से बहुत लोग क्या ठहरेंगे?

एक मनुष्य (आदम) के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य (मसीह) के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।

रोमियों 5:20

व्यवस्था बीच में क्यों आ गई?

व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो।

रोमियों 5:20 (#2)

जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ क्या अधिक हुआ?

जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ।

रोमियों 6:1–2

क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?

कदापि नहीं।

रोमियों 6:3

हम सब जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो किसका बपतिस्मा लिया है?

हम सब जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो हमने उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है।

रोमियों 6:4

हम क्या करे क्योंकि मसीह मरे हुओं में से जिलाया गया हैं?

हम नये जीवन के अनुसार चाल चलें।

रोमियों 6:5

बपतिस्मा के द्वारा हम मसीह में किन दो समानता में उसके साथ जुट गए हैं?

हम मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ जुट गए हैं।

रोमियों 6:6

हमारे लिए क्या किया गया ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें?

हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर नाश हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।

रोमियों 6:9

हम कैसे जानते हैं कि मृत्यु अब मसीह पर प्रभुता नहीं करती है?

हम जानते है कि मसीह मरे हुओं में से जी उठा और फिर कभी नहीं मरेगा इसलिए मृत्यु उस पर प्रभुता नहीं करती।

रोमियों 6:10

मसीह पाप के लिए कितनी बार मरे, और वे कितने लोगों के लिए मरे?

मसीह सबके पाप के लिये एक ही बार मर गया।

रोमियों 6:10–11

एक विश्वासी अपने आपको पाप के लिये क्या समझे?

एक विश्वासी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझे।

रोमियों 6:10–11 (#2)

एक विश्वासी किसके लिये जीवित है?

एक विश्वासी परमेश्वर के लिये जीवित है।

रोमियों 6:13

एक विश्वासी अपने अंगों को किसके लिए सौंपे, और किसको सौंपे?

एक विश्वासी अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपे।

रोमियों 6:14

एक विश्वासी किसके अधीन हो, कि उस पर पाप की प्रभुता न हो?

एक विश्वासी अनुग्रह के अधीन हो, कि उस पर पाप की प्रभुता न हो।

रोमियों 6:18–19

जो पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए, वे क्या सौंपे?

जो पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए, वे अपने अंगों को पवित्रता के लिये धार्मिकता के दास करके सौंप दे।

रोमियों 6:22

परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे क्या प्राप्त होती है?

परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है।

रोमियों 6:23

पाप का मजदूरी क्या है?

पाप की मजदूरी मृत्यु है।

रोमियों 6:23 (#2)

परमेश्वर का वरदान क्या है?

परमेश्वर का वरदान अनन्त जीवन है।

रोमियों 7:1

व्यवस्था की प्रभुता एक मनुष्य पर कब तक रहती है?

जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है।

रोमियों 7:2

विवाहित स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति से कब तक बंधी है?

विवाहित स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उससे बंधी है।

रोमियों 7:3

एक स्त्री विवाह के व्यवस्था से छूट जाने के बाद क्या कर सकती हैं?

एक बार जब वह विवाह के व्यवस्था से छूट गई, तो वह स्त्री किसी दूसरे पुरुष से विवाह कर सकती हैं।

रोमियों 7:4

विश्वासी व्यवस्था के लिये कैसे मरे हुए बन गए?

विश्वासी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए।

रोमियों 7:4 (#2)

व्यवस्था के लिये मरे हुए बनने के बाद, विश्वासी के लिए क्या जाए?

व्यवस्था के लिये मरे हुए बनने के बाद, विश्वासी उस दूसरे के अर्थात् मसीह के हो जाएँ।

रोमियों 7:7

व्यवस्था क्या करता है?

व्यवस्था पाप का पहचान करता है।

रोमियों 7:7 (#2)

क्या व्यवस्था पाप है?

कदापि नहीं, व्यवस्था पाप नहीं है।

रोमियों 7:8

पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में क्या किया?

पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया।

रोमियों 7:12

क्या व्यवस्था पवित्र है?

व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा पवित्र, धर्मी, और अच्छी है।

रोमियों 7:13

पौलुस कहते हैं कि पाप उनके लिए क्या उत्पन्न करनेवाला हुआ?

पौलुस कहते हैं कि पाप, उस अच्छी वस्तु (व्यवस्था) के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ।

रोमियों 7:16

पौलुस क्यों मान लेते हैं कि व्यवस्था भली है?

जब पौलुस कहते हैं जो वह नहीं चाहता वही करता हूँ, तो वह मान लेते हैं कि व्यवस्था भली है।

रोमियों 7:17

ऐसा क्या कारण है कि पौलुस जो नहीं चाहता वही करता है?

पौलुस में बसा हुआ पाप उन्हें वे चीजें करने के लिए बाध्य करता है जो वे नहीं करना चाहते।

रोमियों 7:18

पौलुस के शरीर में क्या वास करती है?

पौलुस के शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती।

रोमियों 7:21

पौलुस अपने शरीर में कौन सी व्यवस्था पाते हैं?

पौलुस अपने शरीर में यह व्यवस्था पाता है कि जब भलाई करने की इच्छा करते हैं, तो बुराई उनके पास आती है।

रोमियों 7:22

पौलुस के भीतरी मनुष्यत्व में परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

पौलुस का भीतरी मनुष्यत्व परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता है।

रोमियों 7:23

पौलुस के अंगों में कौन सी व्यवस्था दिखाई पड़ती है?

पौलुस के अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है और उन्हें पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है।

रोमियों 7:25

पौलुस को मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?

पौलुस हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, जो उन्हें छुड़ाता है।

रोमियों 8:2

पौलुस को पाप और मृत्यु के व्यवस्था से कौन स्वतंत्र करता है?

जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में पौलुस को पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

रोमियों 8:3

व्यवस्था पाप और मृत्यु की व्यवस्था से हमें क्यों छुड़ा नहीं सकती थी?

क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया।

रोमियों 8:4–5

आध्यात्मिक, किस बात पर मन लगाते हैं?

आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।

रोमियों 8:7

शरीर पर मन लगाने का परमेश्वर और व्यवस्था के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है।

रोमियों 8:9

किस चीज़ के न होने के कारण लोग परमेश्वर के जन नहीं?

यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

रोमियों 8:11

परमेश्वर विश्वासियों की मरनहार देह को किस प्रकार जिलाएगा?

परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा विश्वासी के मरनहार देहों को जिलाएगा, जो उनमें बसा हुआ है।

रोमियों 8:14

परमेश्वर के पुत्र किसके चलाए चलते हैं?

परमेश्वर के पुत्र परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं।

रोमियों 8:15

एक विश्वासी कैसे परमेश्वर के परिवार में सम्मिलित किया जाता है?

एक विश्वासी को लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे वह परमेश्वर को हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है।

रोमियों 8:17

परमेश्वर के सन्तान होने के नाते, विश्वासियों को परमेश्वर के परिवार में कौन-कौन से लाभ प्राप्त होते हैं?

परमेश्वर के सन्तान के रूप में, विश्वासी परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं।

रोमियों 8:18-19

विश्वासियों को इस समय के दुःख और क्लेश को क्यों सहन करना चाहिए?

इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो विश्वासियों पर प्रगट होनेवाली है जब परमेश्वर का पुत्र प्रगट होगा।

रोमियों 8:21

इस समय में, सृष्टि किसके दासत्व के अधीन है?

इस समय में, सृष्टि विनाश के दासत्व के अधीन है।

रोमियों 8:21 (#2)

सृष्टि किसकी स्वतंत्रता प्राप्त करेगी?

सृष्टि परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।

रोमियों 8:23-25

विश्वासी अपनी देह के छुटकारे की प्रतीक्षा किस प्रकार करें?

विश्वासी आशा के साथ धीरज से अपनी देह के छुटकारे की प्रतीक्षा करें।

रोमियों 8:26-27

आत्मा स्वयं हमारी की दुर्बलता में किस प्रकार सहायता करता है?

आत्मा स्वयं परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है।

रोमियों 8:28

जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर क्या उत्पन्न करती हैं?

जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं

रोमियों 8:29

जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उनके लिए परमेश्वर ने क्या ठहराया है?

जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे।

रोमियों 8:30

जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया, उनके लिए और क्या किया?

जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया, उन्हें उन्होंने बुलाया, धर्मी ठहराया और महिमा दी है।

रोमियों 8:32

विश्वासी कैसे जानते हैं कि परमेश्वर उन्हें सब कुछ क्यों न देगा?

विश्वासी यह ऐसे जानते हैं कि परमेश्वर उन्हें सब कुछ इसलिए देंगे क्योंकि परमेश्वर ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब विश्वासियों के लिये दे दिया।

रोमियों 8:34

मसीह यीशु परमेश्वर के दाहिने ओर पर क्या कर रहे हैं?

मसीह यीशु परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

रोमियों 8:37

हम क्लेश, संकट, उपद्रव, अकाल, नंगाई, जोखिम, तलवार, या यहां तक कि मृत्यु पर कैसे विजेता से भी बढ़कर हैं?

इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, विजेता से भी बढ़कर हैं।

रोमियों 8:39

पौलुस को किस बात का विश्वास है कि कोई सृष्टि विश्वासियों को क्याँ नहीं कर सकेगी?

पौलुस को विश्वास है कि कोई सृष्टि विश्वासियों को परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकेगी।

रोमियों 9:3

पौलुस अपने भाइयों के लिये जो शरीर के भाव से उनके कुटुम्बी हैं, उनके लिये पौलुस किस बात के लिये तैयार थे?

पौलुस कहते हैं कि वह अपने भाइयों अर्थात् अपने कुटुम्बी के लिये, मसीह से अलग होकर श्रापित होने तक को तैयार है।

रोमियों 9:4

पहले ही से इस्राएलियों के पास क्या है?

इस्राएलियों के पास लेपालकपन का हक़, महिमा, वाचाएँ, व्यवस्था का उपहार, परमेश्वर की उपासना, और प्रतिज्ञाएँ हैं।

रोमियों 9:6–7

पौलुस इस्राएल के वंश और अब्राहम के सभी वंश के बारे में क्या कहता है जो सच नहीं है?

पौलुस कहता है कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं, और अब्राहम के वंश सचमुच उसके सन्तान नहीं हैं।

रोमियों 9:8

कौन परमेश्वर की सन्तान नहीं?

शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं।

रोमियों 9:8 (#2)

परमेश्वर के कौन से वंश गिने जाते हैं?

प्रतिज्ञा के सन्तान वंश के रूप में गिने जाते हैं।

रोमियों 9:10–12

रिबका को उसके बच्चों के जन्म से पहले दिए गए इस बात, "जेठा छोटे का दास होगा" के पीछे क्या कारण था?

परमेश्वर की अपनी मनसा और चुनाव के अनुसार ही यह बातें रिबेका को दिया गया।

रोमियों 9:14–16

परमेश्वर की कृपा और दया के पीछे क्या कारण हैं?

परमेश्वर की कृपा और दया के पीछे का कारण परमेश्वर की बात है।

रोमियों 9:16

परमेश्वर की दया और कृपा के पीछे क्या नहीं है?

परमेश्वर की दया और कृपा के पीछे न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।

रोमियों 9:20

उन लोगों को पौलुस का उत्तर क्या होगा जो यह सवाल उठाते हैं कि वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उसकी इच्छा का सामना करता हैं?

पौलुस उत्तर देते हैं, "भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है?"

रोमियों 9:22

परमेश्वर ने उन लोगों के साथ क्या किया जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे?

परमेश्वर ने जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे उन्हें बड़े धीरज से सही।

रोमियों 9:23

परमेश्वर ने उन लोगों के साथ क्या किया जिन्हें उसने महिमा के लिये पहले से तैयार किया?

परमेश्वर ने उन पर अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की।

रोमियों 9:24

किन लोगों को परमेश्वर ने उन लोगों के रूप में बुलाया है जिन पर वह करुणा कर रहे हैं?

परमेश्वर ने न केवल यहूदियों में से वरन् अन्यजातियों में से भी बुलाया है जिन पर वे करुणा कर रहे हैं।

रोमियों 9:27

इस्राएल की सन्तानों की गिनती में कितने बचेंगे?

इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के रेत के बराबर हो, तो भी उनमें से थोड़े ही बचेंगे।

रोमियों 9:30

जो अन्यजाति धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, उन्होंने इसे कैसे प्राप्त किया?

अन्यजातियों ने विश्वास ही से धार्मिकता को प्राप्त की है।

रोमियों 9:32

इस्राएल क्यों जो धार्मिकता की खोज करते थे फिर भी ठोकर खाए?

इस्राएल विश्वास से नहीं, परन्तु मानो कर्मों से उसकी खोज करते थे इसलिए उन्होंने उस ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई।

रोमियों 9:32–33

इस्राएली किस पर ठोकर खाए?

इस्राएली ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाए।

रोमियों 9:33

जो लोग ठोकर नहीं खाते, बल्कि विश्वास करते हैं, उनके साथ क्या होगा?

जो ठोकर नहीं खाते, बल्कि विश्वास करते हैं, वे लज्जित नहीं होंगे।

रोमियों 10:1

पौलुस के मन की अभिलाषा अपने भाइयों के लिए क्या है?

पौलुस के मन की अभिलाषा यह है कि वे उद्धार पाएँ।

रोमियों 10:3

इस्राएली क्या स्थापित करने का यत्न कर रहे हैं?

इस्राएली अपनी स्वयं की धार्मिकता स्थापित करने का यत्न कर रहे हैं।

रोमियों 10:3 (#2)

इस्राएली किस बात से अनजान है?

इस्राएली परमेश्वर की धार्मिकत से अनजान है।

रोमियों 10:4

मसीह ने व्यवस्था के संबंध में क्या किया?

हर एक विश्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।

रोमियों 10:8

वह विश्वास का वचन कहाँ है जिसे पौलुस प्रचार कर रहे हैं?

विश्वास का वचन निकट है, वह तेरे मुँह में और तेरे मन में है।

रोमियों 10:9

पौलुस के अनुसार एक व्यक्ति उद्धार कैसे पाएगा?

पौलुस कहते हैं कि एक व्यक्ति को अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो वह निश्चय उद्धार पाएगा।

रोमियों 10:13

कोई क्या करेगा, तो वह उद्धार पाएगा?

जो कोई प्रभु का नाम लेगा, तो वह उद्धार पाएगा।

रोमियों 10:14–15

पौलुस क्या कहते हैं कि कौन-से क्रमिक चरणों से सुसमाचार किसी व्यक्ति तक पहुँचता है, ताकि वह प्रभु का नाम लें सके?

पौलुस कहते हैं कि पहले एक प्रचारक भेजा जाता है, फिर सुसमाचार सुना जाता है और उस पर विश्वास किया जाता है ताकि व्यक्ति प्रभु के नाम को लें सके।

रोमियों 10:17

क्या सुनने से विश्वास उत्पन्न होता है?

मसीह के वचन को सुनने से विश्वास उत्पन्न होता है।

रोमियों 10:18

क्या इस्राएल ने सुसमाचार सुना है?

हाँ, इस्राएल ने सुसमाचार सुना है।

रोमियों 10:19

परमेश्वर ने कहा कि वह किसके द्वारा इस्राएल के मन में उपजाएँगे?

परमेश्वर ने कहा कि जो जाति है ही नहीं उनके द्वारा वे इस्राएल के मन में जलन उपजाएँगे।

रोमियों 10:21

जब परमेश्वर ने इस्राएल की ओर हाथ पसारा, तो उन्होंने क्या पाया?

जब परमेश्वर ने इस्राएल की ओर अपना हाथ पसारा, तो उन्होंने एक आज्ञा न माननेवाली और विवाद करनेवाली प्रजा को पाया।

रोमियों 11:1

क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया?

कदापि नहीं!

रोमियों 11:5

क्या पौलुस कहते हैं कि कुछ विश्वासयोग्य लोग जो बाकी हैं, और यदि हैं, तो वे कैसे चुने हुए हैं?

पौलुस कहते हैं कि कुछ विश्वासयोग्य लोग जो बाकी हैं, तो अनुग्रह ही से चुने हुए कुछ लोग बाकी हैं।

रोमियों 11:7

इस्राएलियों में से किन्हें उद्धार मिला, और शेष लोगों के साथ क्या हुआ?

इस्राएलियों में से चुने हुओं को उद्धार मिला, और शेष लोग कठोर किए गए हैं।

रोमियों 11:8

जिन्होंने इसे प्राप्त किया, उनके लिए परमेश्वर द्वारा दी गई मंदता की आत्मा ने क्या किया?

मंदता की आत्मा ने उनकी आँखों को देखने और उनके कानों को सुनने में असमर्थ बना दिया।

रोमियों 11:11

इस्राएल के सुसमाचार को स्वीकार न करने से किसे उद्धार मिला?

इस्राएल के सुसमाचार को स्वीकार न करने से अन्यजातियों को उद्धार मिला।

रोमियों 11:11 (#2)

अन्यजातियों के उद्धार का इस्राएलियों पर क्या प्रभाव होगा?

अन्यजातियों का उद्धार इस्राएलियों में जलन उत्पन्न करेगा।

रोमियों 11:13–17

पौलुस की जैतून के पेड़ की जड़ और जंगली डालियों की उपमा में, जड़ कौन है और जंगली डालियाँ कौन हैं?

जड़ इस्राएल है, और जंगली डालियाँ अन्यजाति हैं।

रोमियों 11:18

पौलुस कहते हैं कि जंगली डालियों को किस भाव से बचना चाहिए?

पौलुस कहते हैं कि जंगली डालियों को उन स्वाभाविक डालियों के ऊपर घमंड करने के भाव से बचना चाहिए जिन्हें तोड़ डाला गया था।

रोमियों 11:20–21

पौलुस जंगली डालियों को क्या चेतावनी देते हैं?

पौलुस जंगली डालियों को चेतावनी देते हैं कि वे विश्वास में बने रहें, क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियाँ न छोड़ी, तो उन्हें भी न छोड़ेंगे।

रोमियों 11:23–24

यदि स्वाभाविक डालियाँ अपने अविश्वास में न रहें, तो परमेश्वर उनके साथ क्या कर सकते हैं?

यदि वे अपने अविश्वास में न रहें तो परमेश्वर उन्हें जैतून की स्वाभाविक डालियों को वापस सांट सकते हैं।

रोमियों 11:25

इस्राएल का एक भाग कब तक कठोर बना रहेगा?

जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा।

रोमियों 11:28–29

परमेश्वर के बैरी होने के बावजूद, इस्राएली परमेश्वर के प्यारे कैसे हैं?

इस्राएली अपने पूर्वजों के कारण परमेश्वर के प्यारे हैं क्योंकि परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता।

रोमियों 11:30–32

परमेश्वर ने यहूदी और अन्यजातियों दोनों के साथ क्या किया है?

परमेश्वर ने यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा है ताकि वह सब पर दया करे।

रोमियों 11:30–32 (#2)

परमेश्वर ने आज्ञा न माननेवालो पर क्या प्रकट किया है?

परमेश्वर ने आज्ञा न माननेवालो पर चाहे वो यहूदी और अन्यजाति दोनों पर दया प्रकट की है।

रोमियों 11:33-34

प्रभु की बुद्धि को किसने जाना? या उनका मंत्री कौन हुआ?

प्रभु कि बुद्धि को किसी ने भी नहीं जाना और उनका मंत्री कोई भी हुआ।

रोमियों 11:36

सब कुछ परमेश्वर से कैसे संबंधित हैं, इसके तीन तरीके कौन से हैं?

सब कुछ परमेश्वर की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये हैं।

रोमियों 12:1

एक विश्वासी के लिए परमेश्वर की आत्मिक सेवा क्या है?

एक विश्वासी की आत्मिक सेवा यह है कि वह अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाए।

रोमियों 12:2

बुद्धि के नये होना से एक विश्वासी के साथ क्या होता है?

बुद्धि के नये होने से एक विश्वासी परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करने में सक्षम बनाता है।

रोमियों 12:3

एक विश्वासी अपने आप को क्या न समझे?

एक विश्वासी जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर अपने आपको न समझे।

रोमियों 12:4-5

मसीह में बहुत से विश्वासी एक-दूसरे से किस प्रकार संबंधित हैं?

बहुत से विश्वासी मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

रोमियों 12:6

प्रत्येक विश्वासी को उन भिन्न-भिन्न वरदान का कैसे उपयोग करना चाहिए जो अनुग्रह के अनुसार उन्हें दिए गए हैं?

प्रत्येक विश्वासी को अपने भिन्न-भिन्न वरदान का उपयोग अपने विश्वास के परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

रोमियों 12:10

विश्वासियों को एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

विश्वासियों को एक-दूसरे के प्रति भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर स्नेह रखना चाहिए और परस्पर आदर भी करना चाहिए।

रोमियों 12:13

विश्वासियों को पवित्र लोगों की आवश्यकताओं में क्या करना चाहिए?

विश्वासियों को पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उसमें उनकी सहायता करनी चाहिए और उनकी पहुनाई में लगे रहना चाहिए।

रोमियों 12:14

विश्वासियों को अपने सतानेवालों के साथ क्या करना चाहिए?

विश्वासियों को अपने सतानेवालों को आशीष देना चाहिए और न की श्राप।

रोमियों 12:16

विश्वासियों को दीनों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

विश्वासियों को दीनों के साथ संगति करना चाहिए।

रोमियों 12:18

जहाँ तक हो सके, विश्वासियों को भरसक सब मनुष्यों के साथ क्या करना चाहिए?

जहाँ तक हो सके, विश्वासियों को भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखना चाहिए।

रोमियों 12:19

विश्वासियों को अपना बदला क्यों नहीं लेना चाहिए?

विश्वासियों को अपना बदल इसलिए नहीं लेना चाहिए, क्योंकि प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।

रोमियों 12:21

बुराई पर विश्वासी कैसे जीत प्राप्त करें?

विश्वासी भलाई के द्वारा बुराई पर जीत प्राप्त करे।

रोमियों 13:1

पृथ्वी के अधिकारियों का अधिकार कहाँ से है?

पृथ्वी के अधिकारियों का अधिकार परमेश्वर के ओर से हैं और वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।

रोमियों 13:2

जो कोई पृथ्वी के अधिकार का विरोध करते हैं, वे क्या पाएँगे?

जो कोई पृथ्वी के अधिकार का विरोध करते हैं, वे परमेश्वर की विधि का विरोध करते हैं, और वे विरोध करनेवाले दण्ड पाएँगे।

रोमियों 13:3

पौलुस विश्वासियों से क्या करने के लिए कहते हैं ताकि वे अधिपति से निडर रह सकें?

पौलुस विश्वासियों से कहते हैं कि वे अच्छा काम करें ताकि वे अधिपति से निडर रह सकें।

रोमियों 13:4

बुराई करने से रोकने के लिए परमेश्वर ने अधिपतियों को कौन-सा अधिकार दिया है?

परमेश्वर ने बुरे काम करनेवाले के लिए अधिपतियों को तलवार और उन्हें दण्ड देने का अधिकार दिया है।

रोमियों 13:6

कर के संबंध में परमेश्वर ने शासन को कौन से अधिकार प्रदान किए हैं?

परमेश्वर ने शासन को करों की मांग करने का अधिकार प्रदान किया है।

रोमियों 13:8

वह कौन सी बात है जिसे पौलुस कहते हैं कि किसी बात में किसी के कर्जदार न हो?

पौलुस कहते हैं कि विश्वासियों को आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार नहीं होना चाहिए।

रोमियों 13:8 (#2)

एक विश्वासी व्यवस्था को कैसे पूरी करता है?

एक विश्वासी दूसरे (पड़ोसी) से प्रेम रखने के द्वारा व्यवस्था को पूरी करता है।

रोमियों 13:9

पौलुस किन आज्ञाओं को व्यवस्था का हिस्सा मानते हैं?

पौलुस व्यवस्था के हिस्से के रूप में व्यभिचार न करने, हत्या न करने, चोरी न करने और लालच न करने की आज्ञाओं को सूचीबद्ध करते हैं।

रोमियों 13:10

एक विश्वासी व्यवस्था को कैसे पूरा करता है?

एक विश्वासी अपने पड़ोसी से प्रेम करके व्यवस्था को पूरा करता है।

रोमियों 13:12

पौलुस कहते हैं कि विश्वासियों को क्या तजकर क्या बाँध लेना चाहिए?

पौलुस कहते हैं कि विश्वासियों को अंधकार के कामों को तजकर ज्योति के हथियार को बाँध लेने चाहिए।

रोमियों 13:13

विश्वासियों को कैसी चाल नहीं चलना चाहिए?

विश्वासियों को लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, व्यभिचार, लुचपन, झगड़ों या ईर्ष्या के चलाए नहीं चलना चाहिए।

रोमियों 13:14

विश्वासियों को शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने के लिए क्या नहीं करना चाहिए?

विश्वासियों को शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय नहीं करना चाहिए।

रोमियों 14:2

मज़बूत विश्वासी को क्या खाना उचित है परन्तु जो विश्वास में निर्बल है उससे क्या खाना चाहिए?

मज़बूत विश्वास को सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग-पात ही खाए।

रोमियों 14:3

खानेवाला न-खानेवाले और न-खानेवाला खानेवाले के प्रति कैसा व्यवहार करे?

खानेवाला न-खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए।

रोमियों 14:3-4

सब कुछ खानेवाले और केवल साग-पात खानेवाले, दोनों को कौन ग्रहण करता है?

सब कुछ खानेवाले और केवल साग-पात खानेवाले, दोनों को परमेश्वर ग्रहण करता है।

रोमियों 14:5

पौलुस किस अन्य विषय का अपने ही मन में निश्चय करने का उल्लेख करता है?

पौलुस अपने मन में निश्चय करने का उल्लेख इस विषय में करते हैं कि कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर मानता है, और कोई सब दिन एक सा मानता है।

रोमियों 14:7-8

विश्वासी किसके लिए जीवित हैं और किसके लिए मरते हैं?

विश्वासी प्रभु के लिए जीता हैं और प्रभु के लिए मरता हैं।

रोमियों 14:10

अंततः हम सब के सब कहाँ खड़े होंगे?

अंततः हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

रोमियों 14:13

आगे को हम एक दूसरे के सामने क्या न रखें?

आगे को हम एक दूसरे के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखें।

रोमियों 14:14

पौलुस को प्रभु यीशु से यह निश्चय हुआ है कि कौन-सी वस्तुएँ अशुद्ध नहीं हैं?

पौलुस को यह निश्चय हुआ है कि कोई भी वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं है।

रोमियों 14:17

परमेश्वर का राज्य क्या है?

परमेश्वर का राज्य धार्मिकता और मिलाप और पवित्र आत्मा में आनन्द के बारे में है।

रोमियों 14:21

पौलुस के अनुसार, एक भाई को दूसरे भाई के सामने क्या करना चाहिए जो माँस नहीं खाता या दाखरस नहीं पीता?

पौलुस कहते हैं कि यह भला है की यदि कोई भाई दूसरे भाई के सामने माँस नहीं खाता या दाखरस नहीं पीता।

रोमियों 14:23

जो कुछ विश्वास से नहीं, वह क्या है?

जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।

रोमियों 15:1–2

विश्वास में बलवानों, को विश्वास में निर्बलों के साथ क्या करना चाहिए?

विश्वास में बलवानों, को विश्वास में निर्बलों की निर्बलताओं में सहायता करें, की वे भलाई के लिए सुधारने के निमित्त प्रसन्न रहे।

रोमियों 15:3

पौलुस किसका उदाहरण देते हैं जिसने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया, बल्कि निन्दकों की निन्दा उन पर आ पड़ी?

मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया, बल्कि निन्दकों की निन्दा उन पर आ पड़ी।

रोमियों 15:4

जितनी बातें पहले से लिखी गईं उसका उद्देश्य क्या था?

जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं।

रोमियों 15:5

पौलुस विश्वासियों से क्या चाहता है कि वे आपस में एक-दूसरे के प्रति धीरज और प्रोत्साहन का अभ्यास करें?

पौलुस यह चाहते हैं कि, विश्वासी मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन के रहें।

रोमियों 15:8–9

पौलुस किसका उदाहरण देते हैं जो खतना किए हुए लोगों का सेवक बना?

मसीह खतना किए हुए लोगों का सेवक बना।

रोमियों 15:10–11

पवित्रशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर की करुणा के कारण हे जाति-जाति के सब लोग क्या करो?

पवित्रशास्त्र कहता है कि हे जाति-जाति के सब लोग आनन्द करो और प्रभु की स्तुति करो।

रोमियों 15:13

पौलुस के अनुसार, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से विश्वासियों में क्या होगा?

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से विश्वासी आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण हों जाएँगे, और उनकी आशा बढ़ती जाएगी।

रोमियों 15:16

परमेश्वर ने पौलुस को क्या और क्यों बनाया?

परमेश्वर ने पौलुस को अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का सेवक बनाया ताकि सुसमाचार की सेवा याजक के समान कर सके।

रोमियों 15:18–19

मसीह ने किस प्रकार पौलुस के द्वारा अन्यजातियों में अधीनता उत्पन्न की?

मसीह ने पौलुस के द्वारा वचन और कर्म से, चिह्नों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ्य से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से कार्य किया, ताकि अन्यजातियों में विश्वास और अधीनता उत्पन्न हो।

रोमियों 15:20–21

सुसमाचार प्रचार को लेकर पौलुस के मन की उमंग क्या थी?

सुसमाचार प्रचार को लेकर पौलुस के मन की उमंग यह थी कि वह वहाँ सुसमाचार सुनाए जहाँ मसीह का नाम अब तक नहीं लिया गया, ताकि वह किसी और की नींव पर घर न बनाए।

रोमियों 15:24

पौलुस किस स्थान की यात्रा की योजना बना रहा था जिससे वे उनसे भी भेंट कर पाएँगे?

पौलुस की योजना इसपानिया जाने की थी, और उसी यात्रा के मार्ग में वह रोम आना चाहता था ताकि वहाँ के विश्वासियों से भी भेंट कर सके।

रोमियों 15:25

पौलुस अभी यरूशलेम क्यों जा रहे हैं?

पौलुस अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यरूशलेम को जा रहे हैं।

रोमियों 15:27

पौलुस क्यों कहता है कि अन्यजाति विश्वासी यहूदी विश्वासियों की शारीरिक बातों के कर्जदार हैं?

पौलुस कहते हैं कि अन्यजाति विश्वासियों ने यहूदियों की आत्मिक बातों में भाग लिया है, इसलिए वे यहूदियों की शारीरिक बातों की सेवा करने के कर्जदार हैं।

रोमियों 15:31

पौलुस किससे बचे रहना चाहता था?

पौलुस यहूदिया के अविश्वासियों से बचे रहना चाहता था।

रोमियों 16:1–2

बहन फीबे पौलुस के लिए क्या हुई है?

बहन फीबे पौलुस और बहुतों की उपकारिणी हुई है।

रोमियों 16:4

प्रिस्का और अक्विला ने पौलुस के लिए क्या किया था?

प्रिस्का और अक्विला ने पौलुस के लिए अपना ही सिर दे रखा था।

रोमियों 16:5

रोम में कलीसिया कहाँ लगती है?

रोम में कलीसिया प्रिस्का और अक्विला के घर में लगती है।

रोमियों 16:7

अन्द्रुनीकुस और यूनियास पहले पौलुस के साथ क्या हुए थे?

अन्द्रुनीकुस और यूनियास पहले पौलुस के साथ कैद हुए थे।

रोमियों 16:16

विश्वासी को आपस में कैसे नमस्कार करना है?

विश्वासी को आपस में एक पवित्र चुम्बन से नमस्कार करना है।

रोमियों 16:17

पौलुस विश्वासियों से क्या कहता है कि वे उन लोगों से कैसा व्यवहार करें जो फूट डालते हैं और ठोकर खाने का कारण बनते हैं?

पौलुस विश्वासियों से कहता है कि वे उन लोगों से सावधान रहें जो फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं।

रोमियों 16:17–18

कुछ लोग क्या कर रहे हैं जिसके कारण फूट और ठोकर हो रही है?

कुछ लोग उस शिक्षा के विपरीत जा रहे हैं जो उन्होंने पाई है और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका दे रहे हैं।

रोमियों 16:19

पौलुस विश्वासियों को भलाई और बुराई के लिए कैसे बने रहो कहते हैं?

पौलुस चाहते हैं कि विश्वासी भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहें।

रोमियों 16:20

शान्ति का परमेश्वर शीघ्र ही क्या करेगा?

शान्ति का परमेश्वर शैतान को विश्वासियों के पाँवों के नीचे शीघ्र ही कुचल देगा।

रोमियों 16:22

वास्तव में इस पत्री के लिखनेवाले कौन है?

वास्तव में इस पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस है।

रोमियों 16:23

विश्वासी इरास्तुस का पेशा क्या है?

इरास्तुस नगर का भण्डारी है।

रोमियों 16:25–26

पौलुस अब कौन-सा भेद प्रचार कर रहे हैं, जो सनातन से छिपा रहा?

पौलुस अब यीशु मसीह के विषय का भेद प्रचार कर रहे हैं।

रोमियों 16:26

पौलुस किस उद्देश्य से प्रचार कर रहे हैं?

पौलुस सब जातियों में इसलिए सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएँ।